का; परित्यागी=त्यागी है; यः=जो; मद्भक्तः=मेरा भक्त; सः=वह; मे=मेरा; प्रियः=प्रिय है।

अनुवाद

जो व्यावहारिक कार्यों की अपेक्षा से रहित, शुद्ध, कुशल और अनासक्त है, सब दुःखों से छूटा हुआ है तथा किसी फल के लिए प्रयत्न नहीं करता, वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।।१६।।

तात्पर्य

भक्त को धन का दान किया जा सकता है, परंतु धन के लिये संघर्ष करना उसके योग्य नहीं। भगवत्कृपा से अपने-आप धन की प्राप्ति होने पर वह उद्विग्न भी नहीं होता। भक्त दिन में कम से कम दो बार स्नान अवश्य करता है और भक्तियोग का अभ्यास करने के लिये ब्राह्ममुहूर्त में शय्या त्याग देता है। इस प्रकार वह स्वभावतः बाहर-भीतर से शुद्ध रहता है। सच्चा भक्त जीवन की सब क्रियाओं का सम्पूर्ण तात्पर्य जानता है और प्रामाणिक शास्त्रों में दृढ़ विश्वास रखता है; अतः वह परम दक्ष है। पक्षपात के आग्रह से मुक्त होने से उसे उदासीन कहा जाता है। सब उपाधियों से मुक्त हो जाने के फलस्वरूप वह कभी दुःखी नहीं होता। यह जानकर कि उसका शरीर उपाधिमात्र है, वह शारीरिक दुःखों से बिल्कुल असंग रहता है। शुद्धभक्त ऐसा कोई उद्यम नहीं करता, जो भक्तियोग के प्रतिकूल हो। उदाहरणार्थ, भवन-निर्माण के लिए महती शक्ति चाहिये। भक्त इस कार्य को तभी करेगा, यदि यह भक्तियोग के विकास के रूप में कल्याणकारी हो। भगवत्-मन्दिर के निर्माण के लिए वह सब प्रकार के कष्टों को स्वीकार कर सकता है, पर अपने बन्धु-बान्धवों के लिए बड़ा भारी घर नहीं बनाता।

यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न कांक्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः।।१७।।

यः=जो; **न**=न; **हृष्यति**=हर्षित होता है; **न**=कभी नहीं; **द्वेष्टि**=दुःखी होता; **न**=न; **शोचति**=शोक करता है; **न**=न; **कांक्षति**=कामना करता है; **शुभ**=अनुकूल (प्रिय); **अशुभ**=प्रतिकूल (अप्रिय) का; **परित्यागी**=त्यागी है; **भक्तिमान्**=भक्त; **यः**=जो; **सः**=वह; **मे**=मेरा; **प्रियः**=प्रिय है।

अनुवाद

जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक करता है और न कामना ही करता है, तथा जो शुभ और अशुभ आदि सम्पूर्ण कर्मों के फल का त्यागी है, वह मेरा भक्त मुझे प्रिय है।।१७।।

तात्पर्य

शुद्धभक्त लौकिक लाभ-हानि के लिए हर्षित या दुःखी नहीं होता। वह पुत्र-शिष्य आदि की कामना नहीं करता और न ही उनके अभाव में दुःख मानता है। किसी प्रिय वस्तु की हानि होने पर भी शोक नहीं करता और न उसकी प्राप्ति में हर्ष को